M.A. Examination, 2019
Semester-IV
Hindi
Course : XVI (Special Paper)
(तुलसीदास)

Time : 3 Hours **Full Marks : 40**

Questions are of value as indicated in the margin

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए– 2×8=16

क) सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू।।
नदपि उचित जनु बोलि सप्रीति। पठइअ काज नाथ असि नीति।।
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पुनीत अजु येहु गेहू।।
आयसु होइ सो करौं गोसाईं। सेवकु लहइ स्वामि सेवकाई।।

ख) सिव सिव होई प्रसन्न करु दायां
करुनामय उदार कीरति बलि, जाउँ हराह, निज माया।।
जलज नयन गुरु अयन मयन रिपु, महिमा जानन कोई।
विनु तुअ कृपा राम पद पंकज, सपनेहुँ भगति न होई।
ऋषि सिद्धमुनि मनुज दनुज सुर, अपर जीव जगमाहीं।
तुअ पद विमुख न पार पाव कोउ, कलप कोटि चलि जाहीं।।

ग) नर-नारि उधारी सभामहँ होत दियो पट, सोच हर्‌यो मन को।
प्रहलाद बिषाद निवारन बाना–तारन, मीत अकारन को।
जो कहावत दीन दयालु सही, जेहि भार सदा अपने पन को।
'तुलसी' तजि आन भरोस, भजै भगवान, भलो करिहैं जन को।।

घ) सोहत सहज सुहाये नैन।
खंजन मीन कमल सकुचत तब जब उपमा चाहत कवि दैन।।
सुंदर सव अंगनि सिसु-भूषन राजत जनु शोभा आये लैन।
बड़ो लाभ, लालची लोभबस रहि गयो लखि सुखमा बहु मैन।
भोर भूप लिये गोद मोद भरे, निरखत बदन, सुनत कल बैन
बालक-रूप अनूप राम-छबि निवसति तुलसिदास-उर-ऐन।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए– 2×12=24

क) 'सिर्फ भक्ति-प्रतिपादन तुलसी का मुख्य उद्देश्य नहीं था, बल्कि उसके माध्यम से उन्होंने समन्वय की विराट चेष्टा की है'– कैसे? – विचार कीजिए।

ख) 'विनय पत्रिका' के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए।

ग) 'कवितावली' में युग-यथार्थ का चित्रण मिलता है।" उक्त कथन का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

घ) गीतावली' के पठित अंशों के आधार पर तुलसी के वात्सल्य-वर्णन को स्पष्ट कीजिए।